Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 30thApril 2019, Revised on 12th May 2019, Accepted19th May 2019

शोध–आलेख

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

* प्रमिला पुर्बिया, *शोधार्थी*
डॉ. देवेन्द्रा आमेटा, *पर्यवेक्षक*
जर्नादन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय) प्रतापनगर, उदयपुर (राज.)
Email – pramilapurbia10@gmail.com, Mob. - 9680400398

मुख्य शब्द - *संवेगात्मक बुद्धि, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग आदि.*

शोध सार

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का मुख्य लक्ष्य अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। शोधार्थी द्वारा न्यादर्श चयन हेतु प्रस्तुत शोध हेतु राजस्थान में उदयपुर संभाग के उदयपुर, डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। तीनों जिलो से कुल 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया था।शोधार्थी ने दत्त संकलन के लिए डेनियल गोलमेन द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है। दत्त संकलन के पश्चात् उनको सारणीयन करते हुए आँकड़ो का विश्लेषण टी परीक्षण एवं आरेख प्रदर्शन के आधार पर किया गया। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

प्रस्तावना

विश्व के अन्य किसी भी देश में इस प्रकार की व इतनी अधिक जातिगत व्यवस्था नहीं है जितनी भारत में है। व्यक्ति को जाति तथा प्रभाव उसके व्यवसाय चयन को प्रभावित करता है। देश में कई लोग ऐसे है जो इस व्यवस्था की वजह से स्वतंत्रता पूर्व से इन अवसरों की समानता का उपभोग करने से बंधित रहे हैं।

आर्यकाल से समाज में कार्य निष्पादन आधारित समाज व्यवस्था थी तथा शुद्र उस व्यवस्था के सबसे निचले स्तर पर थे। संगठित एवं व्यवस्थित समाज संरचना आने से पूर्व समाज में बहुत सी असमानताएँ थी। इन विषमताओं तथा सामाजिक आवश्यकताओं ने वर्ण व्यवस्था को जन्म दिया। इसमें चार वर्ण थे – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र। ब्राह्मण (बोद्धिगत), क्षत्रिय (रक्षात्मक), वैश्य (व्यापारिक कार्य) तथा शुद्र (दास तथा सेवाकार्य) व्यक्तिगत कार्य निष्पादन ही मूलभूत सामाजिक ढ़ांचे की संरचना का आभार था।

आज के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति पर किसी प्रकार के बंधन नहीं रहे है, वह स्वतंत्र है। समय बदल चुका है, जागरूकता आ गई है। सन् 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात् अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजातियों को तथा अन्य पिछड़ी जातियों को संविधान में शैक्षिक तथा सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग की परिभाषा में लिया गया तथा इसके लिए अतिरिक्त व्यवस्था की गई।

जातिगत संरचना में निजी जाति के लोगों को ऊँची जाति के लोगों के सेवक ही माना जाता था, परन्तु स्वतंत्रता से बहुत पहले से लेकर अब तक इस बारे में बहुत परिवर्तन आ चुका है। धीरे–धीरे समाज में उस व्यवस्था का एक दाग के रूप में गंभीर माना गया तथा समाज के अनुभवों ने इस पर गहन विचार किया तथा यह माना कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति समाज

रूप से महत्वपूर्ण है, अवरणीय है, अतः समाज के उस वर्ग को भी आगे लाने के लिए तथा अवसरों की समानता प्रदान करने के लिए विचार किये गये। अब सरकार भी इस ओर प्रयासरत है। सरकारी तौर पर इन जातियों की सूचियाँ प्रकाशित की गई तथा सरकार भी उन्हें कैसा उठाये के लिए विभिन्न योजनाएँ बनाकर लागू कर रही है।वर्तमान में संवेगात्मक बुद्धिको लेकर अनुसंधान की आवश्यकता महसूस की गई।

उद्देश्य

1. समग्र न्यादर्श शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. समग्र न्यादर्श निजी विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
3. समग्र न्यादर्श राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
4. समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
6. समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
7. समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. समग्र न्यादर्श अनुसूचित जाति वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
9. समग्र न्यादर्श अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
10. समग्र न्यादर्श अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्राकल्पनाएँ

- समग्र न्यादर्श अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अनुसंधान का विधिशास्त्र

- प्रस्तुत शोध में शोध की प्रकृति को देखते हुए शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।
- दत्त संकलन हेतु **डेनियल गोलमेन** द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया।

न्यादर्श का स्वरूप इस प्रकार से हैः–

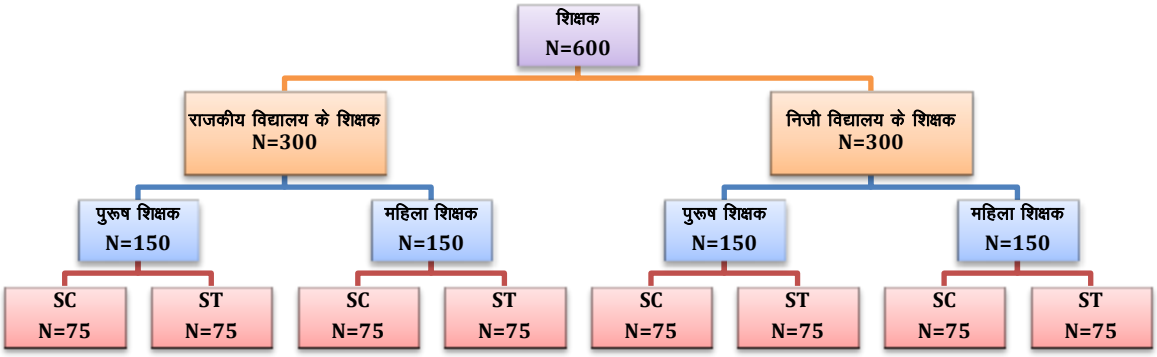

- प्रस्तुत शोध में मध्यमान , मानक विचलन एवं टी परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

सारणीयन एवं विश्लेषण

सारणी संख्या – 1

समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

क्र. सं.	संवेगात्मक बुद्धि के आयाम	मध्यमान		मानक विचलन		ज.टंसनम	सार्थकता
		निजी एवं राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षक	निजी एवं राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षक	निजी एवं राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षक	निजी एवं राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षक		
1.	स्वयं के संवेग के प्रति जागरूक	263.09	255.60	27.16	23.40	3.62	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया
2.	दूसरों के संवेग के प्रति जागरूक	192.70	188.20	19.63	17.55	2.96	
3.	स्वयं के संवेग का प्रबन्धन	96.30	89.80	13.50	12.56	6.11	
4.	दूसरों के संवेग का प्रबन्धन	235.90	228.50	21.65	19.99	4.35	

स्वतन्त्रता के अंश (df=598) पर

0.05 स्तर पर सारणीमान – 1.96

0.01 स्तर पर सारणीमान – 2.53

परिणाम :–

1. समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक स्वयं के संवेग के प्रतिसमग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक जागरूक है।
2. समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक दूसरों के संवेग के प्रतिसमग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक जागरूक है।
3. समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक स्वयं के संवेग का प्रबन्धनसमग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक करते है।
4. समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक दूसरों के संवेग का प्रबन्धनसमग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक करते है।

सारणी संख्या – 2

समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

क्र. सं.	संवेगात्मक बुद्धि के आयाम	मध्यमान		मानक विचलन		ज.टंसनम	सार्थकता
		निजी एवं राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षक	निजी एवं राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षक	निजी एवं राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षक	निजी एवं राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षक		
1.	स्वयं के संवेग के प्रति जागरूक	263.09	255.60	27.16	23.40	3.62	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया
2.	दूसरों के संवेग के प्रति जागरूक	192.70	188.20	19.63	17.55	2.96	
3.	स्वयं के संवेग का प्रबन्धन	96.30	89.80	13.50	12.56	6.11	
4.	दूसरों के संवेग का प्रबन्धन	235.90	228.50	21.65	19.99	4.35	

स्वतन्त्रता के अंश (df=598) पर

0.05 स्तर पर सारणीमान – 1.96

0.01 स्तर पर सारणीमान – 2.53

परिणाम :–

- समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक स्वयं के संवेग के प्रतिसमग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक जागरूक है।
- समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक दूसरों के संवेग के प्रतिसमग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक जागरूक है।

- समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक स्वयं के संवेग का प्रबन्धनसमग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक करते है।
- समग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक दूसरों के संवेग का प्रबन्धनसमग्र न्यादर्श निजी एवं राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक करते है।

सारणी संख्या – 3

समग्र न्यादर्श अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

क्र. सं.	संवेगात्मक बुद्धि के आयाम	मध्यमान		मानक विचलन		ज.टंसनम	सार्थकता
		अनुसूचित जाति वर्ग के शिक्षक	अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षक	अनुसूचित जाति वर्ग के शिक्षक	अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षक		
1.	स्वयं के संवेग के प्रति जागरूक	260.1	253.55	26.62	23.2	3.21	0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया
2.	दूसरों के संवेग के प्रति जागरूक	190.4	185.9	18.73	17.32	3.06	
3.	स्वयं के संवेग का प्रबन्धन	93.31	87.56	12.99	11.76	5.68	
4.	दूसरों के संवेग का प्रबन्धन	232.91	226.49	21.15	19.9	3.83	

स्वतन्त्रता के अंश (df=598) पर

0.05 स्तर पर सारणीमान – 1.96

0.01 स्तर पर सारणीमान – 2.53

परिणाम :–

1. समग्र न्यादर्श अनुसूचित जाति वर्ग के शिक्षक स्वयं के संवेग के प्रतिसमग्र न्यादर्श अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक जागरूक है।
2. समग्र न्यादर्श अनुसूचित जाति वर्ग के शिक्षक दूसरों के संवेग के प्रतिसमग्र न्यादर्श अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक जागरूक है।
3. समग्र न्यादर्श अनुसूचित जाति वर्ग के शिक्षक स्वयं के संवेग का प्रबन्धनसमग्र न्यादर्श अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक करते है।
4. 4. समग्र न्यादर्श अनुसूचित जाति वर्ग के शिक्षक दूसरों के संवेग का प्रबन्धनसमग्र न्यादर्श अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक करते है।

वर्तमान में प्रासंगिकता :–

शोधआलेखसे समग्र न्यादर्श अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के शिक्षकों अपनी संवेगात्मक बुद्धि को उन्नयनकर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Agarwal J.C. (2002) : "Educational Research", Arga book depot, New delhi.

Best, J.W. Kahn, James V. (2006) : "Research in Education" Prentice Hall of India, New Delhi

Good, C.V., Bar and Scates Douglas E. (2005) : "Method of Research : Educational Psychological Sociological", Appleton Century, Inc., New York.

Guilford, J.P. (1965) : "Fundamental Statistics in Psychology and Education", New York Mcgrew Hill Book Co.

Karlinger F. (1983) : "Fundamental of Behavioral Research", New Delhi, Surjeet Publication.

Tripati, J. (2011) : "Abnormal Psychology", Bhargava Book House, Agra, India.

*** Corresponding Author:**
प्रमिला पूर्बिया, *शोधार्थी एवं* **डॉ. देवेन्द्रा आमेटा**, *पर्यवेक्षक*
जर्नादन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय) प्रतापनगर, उदयपुर (राज.)
Email – pramilapurbia10@gmail.com, Mob. - 9680400398